

वरा। यालिगीकाक्याविशादुर्धर॥ नद्यजलीत्याकदंबा॥३६॥ सह  
यद्यवलोकणेतत्ततं॥ ओतेहोपरिसामागीलकथा॥ यमुनातीरीजगति  
तयान्चापिता॥ उदविषेतांसकल ही॥३७॥ मध्यनात ईर्षीस्कंदतातमि  
त्र॥ हाकाठावायेथुनभूमित्र॥ दयार्जुनिकदंबवरि श्रीधरचेत्त  
चारतद्यवां॥३८॥ उदयवपवरि इन्द्रकर्तौसादिसेष्टीराववि  
जावर॥ किञ्चेरावतांसठस लक्ष्मीप्रिया॥३९॥ त्रिसुवनश्वरतैसादिसेष्ट॥४०॥  
तोवैकुटिचासकुमार॥३५॥ दिक्षिशार॥ कदंबावरि श्रीधर  
दिनोद्यारुद्योभतसे॥४१॥ काक्यायमदनअरंभीलूजलहां॥४२॥ (सावन  
शाचिमुतीतेहां॥ उर्धवदेकमनाधव॥ गोपन्सर्वविलोक्तिः॥४३॥  
परमसुवासपितवसन॥ छुटकासीलेंस्वकरेकरुग॥ सुरंगपद्म  
रवेउन॥ मुक्तमाकासांवरीव्या॥४४॥ कहिसुत्रसरसाविलो॥ कर्णी

Rajawade Shashikant Mehta  
Shashikant Mehta  
Rajawade Shashikant Mehta  
Shashikant Mehta

तदति दिव्यं कुडले ॥ आकर्षित रियं तनेत्रोपके ॥ मुख विकारो लेसु  
हास्य ॥ ४३ ॥ सुनिकर सेवो तिले भूरवंड ॥ तैसे आजन बहु प्रव  
उं ॥ तेबकं वाज उन जङड ॥ हाकफ्रोडी लिते धवां ॥ ४४ ॥ तोवे कुंठि  
चावे छहाळ ॥ सकुमार तहुत माल निकं ॥ उडिघातली ताकाळ ॥  
गोप सकल पाहाती ॥ ४५ ॥ उडी रेसां याचिकाळ ॥ चात धनु वाऽ  
इक उंच गोले ॥ कलोक दीरा जीजा कल ॥ विशानि रर्चत धवां ॥ ४६ ॥  
परम जाहुं तके लेगोपके ॥ ते सुल सकल धावेल ॥ चिमानार  
ठपाहों लागल ॥ जाहुं तक तव्य हरिचं ॥ ४७ ॥ मटानि सहीत म  
इन इहन ॥ व्राचि सहीत सहस्रनयन ॥ सावित्री सहीत कमलासन ॥  
कोतुक पाहों पातले ॥ ४८ ॥ मित्र कंन्या जीवनि जगजीवन ॥

Digitized by srujanika@gmail.com

24  
भुजदेउ अाकृतीको धाय मान ॥ परम वाचा ऐ कोण ॥ धांवं दुर्ज  
माहितो ॥ ४९ ॥ माहा कप ठिं सर्पि काण ॥ व्रात फणी ताड विशाळ ॥ धुंधु का  
रास्सरि स्थाइ चाक ॥ माहा विकरा लड टती ॥ ५० ॥ नेत्रिं हे रवी लाज गन्मोह  
ना ॥ सायाचक चाल क उद्ध चेतन ॥ जोंगी त केतन नारिचं हर्वचिन ॥ सन का  
हि का खी ध्याति जया ॥ ५१ ॥ सन का दिकं हृक्ष्य संपुटी ॥ जोकां पहुडे तति  
गोमटि ॥ पश्चोद्भुव आयि भुजे ॥ हाती भुउ गी जाइ ज्याचि ॥ ५२ ॥  
जैनो ऐसी यामुन मईना ॥ नाडी व- पथि हाया ॥ काळये देर वोनी  
बज भुराया ॥ धावो नडं रवी बर्म स्तुष्ट ॥ ५३ ॥ उद्राकरणी न्तराकी स्थगी ॥  
वेढू धालु न मृति भिं कछकी ॥ सची हानं हातुं संवली ॥ आष्ट्रा दिली कां  
कर्षपे ॥ ५४ ॥ जो विद्यु जन मान समैराछ ॥ जनं तक छ्याण हाय कघन नीक  
जो पुराण खुत पनि जमक वद्धे क ॥ सर्पे सकछे जांवली लिं ॥ ५५ ॥ ताहो ने  
गं किलावन समठी ॥ के तुं ने रमावधु ज्ञाकिला गगणी ॥ किई स्वरास माया

वस्तुनि॥ ज्ञापलीकरणीहावीत॥५६॥ किषुविद्वानथासुजासी॥ पाका  
त्राप्यथाशतुंबाधेनागपारी॥ तैन्सेनकालयोजगद्धानि॥ वेठेघ  
लुनिज्ञावकीले॥ ८७॥ कुञ्जेवेष्टिलापरमपुक्षप॥ नहालेनवेष्टपंतमें  
पुरंश्च॥ लीकाज्यावतारिजगन्निवासा॥ लीकापक्तं सदावीतस्य॥५८॥  
घेवसादरविश्रीपती॥ गोपनार्था॥ इति॥ माहाज्याकोद्रेहांका  
देति॥ हृदयपिटिधवाबा॥ ८८॥ गनिपाहुतिनिर्जन॥ देवलल  
नादेशधतीसमग्रं॥ यांस्येनेत्रिवा॥ ८९॥ त्रोक्तज्ञापरजान्नितया॥५९॥  
तटक्षेपहातीनयनि॥ कुञ्जेवेष्टिलाचकपाणी॥ द्युःनेवेकरोते  
धरणी॥ उलोंपाहुतेधवां॥ ६०॥ यमुनेसीजालाहात्रतांत॥ गोकुंकं  
तकायवर्तलीमात॥ दुष्ट्यीनेपरमजाद्धुत॥ ज्ञायावितीलोकांते॥ ६१॥  
चपकापडतीकडकडान॥ आद्धुत॥ ब्रह्मकंजन॥ उडगयोपतीपतन॥

Original Provenance: The Rishivade Sanshodhan Mandal, Phule and the Yashwantrao Chiman Prashnayak, Mumtazpur.

लोकशोकेविकृक्ष ॥६३॥ कांपोलागलीधनत्री ॥ उगेचज्यासुधातिज  
 नान्येनेत्रि ॥ कच्छाहिननरनानि ॥ सयज्यांतरिवाटतनरे ॥६४॥ कमक्षाप  
 तिचिजननी ॥ पनमविकृक्षशोकेकरनी ॥ दिडकोलागलेस्तनहोन्ही  
 ज्यास्टनयेनीवाहूती ॥६५॥ सिंहाल्लगापीगोक्षीसमस्त ॥ नंदहीधावेन्म  
 यापीत ॥ यशोदाबाहेरउल्लधाव ॥ रोहीनियेतलवलहोष्टद्विधि  
 घरिंजहोतांसंकषयि ॥ बाहेरज्ञान ॥ येशोहाव्ययोजगजीव  
 न ॥ कोण्यावनागेलोरे ॥६६॥ यांचरदार ॥ वनोजातिलोकस  
 मग ॥ बाळेंवांगतीजातिसहर ॥ त्रामतुङ्दरपाहावया ॥६७॥ सोडोनी  
 रेहेगेहेजाशा ॥ पाहेंईछीटिपरमतुलदा ॥ नवगतीकायजालेंहषी  
 केशां ॥ कोण्यावनीपाहावं ॥६८॥ तोध्वजवज्यरेनवाचिन्हे ॥ हरिपह  
 मुद्रादेवतिचिन्हे ॥ परोंवतीपदेस्तन ॥ एठेंगेचरणउमटल ॥६९॥  
 जीकेउमटलेगाइचेरवुन् ॥ पथेंगेलामुरहर ॥ जैसेवदाव

shodhan, Mondal, Dhulo and  
 Yashwantrao  
 Prajapati  
 Bhawan  
 Parijat  
 Dharan  
 Mitali  
 Vaidika  
 Vaidika  
 Vaidika

चेकार॥ स्वतपनीर्धरित्वीति ॥ १४३॥ अपसोनेदयेशाहान्त्रव  
आलेयमुनातीराधावोन॥ तोरयेगोपशोकेकन्त्या॥ मृद्धोयं उनप  
उताती॥ ७२॥ तोंमुजंगेंवेष्टिल् चनमाकी॥ संविदेरवीलानेत्रकमली॥  
यकलिहाकतेकुंजाली॥ तेवरति तेनवजाये॥ ७३॥ यशोहात्येणका  
न्हया॥ जातां दुजकोठंपाहेंतान्हया बात्रंकां धावेंलवलाखां॥ वि  
सावियागोपाका॥ ७४॥ स्वनि पान्हा॥ कोन्हासपाञ्जुंराजी  
वनयना॥ माझ्यापाड़कामनमाद निजवहनाहवीरे॥ ७५॥  
धावधावगकान्हुई॥ सांदवरकुआत्सजेजाई॥ उहरउक्तसेवनका॥  
बाई॥ कोणराईपाहुंदुतें॥ ७६॥ इधीदुग्धतुंसर्वरवासीपाही  
राजसातुजनबोलंकाही॥ पाड़सायकहासेठदेई॥ धावोनियांमज  
जातां॥ ७७॥ दुजम्याबांधलेउरवक्तेसी॥ लृणउनीसरवयात्सलत्ति ॥



आगलागोमास्तास्याहातात्पृष्ठा ॥८७॥  
कायकायज्ञातुर्गुणा ॥ उविन्दुर्पुरकरित् ॥ वन ॥ सक्वर्गोपद्वा  
कें करंण ॥ मस्तकज्ञावनीजा ॥ टती ॥ ८९ ॥ यकवहस्तकेंपिति ॥  
येकदीर्घस्वरेंहाकोदती ॥ नंदचेनत्रिंजाश्टवाहार्ता ॥ पड़द्वितीस्त  
घीत्री ॥ ९० ॥ हुंबरडाहायानल्लातिगाँडी ॥ जाश्टवाहातिनेत्रि  
पाही ॥ येक्षादाद्यगेज्ञातंस ॥ ९१ ॥ सक्वर्गेण्डुंयथंत्रि ॥ ९१ ॥ सक्वर्गेण्डी  
यासमवेतद्दृष्टिमाया ॥ च ॥ ९२ ॥ हायाजीप्रवेशावया ॥ तांबछी  
रामज्ञाडवायेवानियां ॥ छाणो ॥ गाईयेकपे ॥ ९२ ॥ त्रिसुवनन  
यकवनमाळी ॥ यासीपयनहाकस्ताकी ॥ दृष्टांतहीकोपेचक्षति ॥  
दृष्टांतपदवनीया ॥ ९३ ॥ बकीभद्रान्तेवचनज्ञोकाशी ॥ सक्वां  
मन्त्रेवव्यवाटलमनी ॥ याचवचनीविश्वासधरनी ॥ तटस्तनयनिपा  
इक्षेवक्ष्यवाटलमनी ॥ अस्त्रेवव्यवक्षेवनी ॥ काक्षयमुहरिबांधीलाजीवक्षेव  
इक्षति ॥ ९४ ॥ अस्त्रेवक्षेवक्षेवक्षेवक्षेवनी ॥

Balawade Sanshodhan Mandir, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Prasathan,  
District Dhule, Maharashtra, India  
Digitized by srujanika@gmail.com

यावरि श्रीद्वाराप्रतापतरणी ॥ कायकरिताजाहृला ॥ ८५ ॥ दृष्टवेठ  
धातलेसुजंगे ॥ शरनीरफुगवीलं रमांवरे ॥ काळ्यदेहतडतडीलाकं  
वेठेकाढिलेतैधवां ॥ ८६ ॥ जरिक्षयाभरिनकाढितांवेठे ॥ तरियंद  
ठाईहोतिरवंडे ॥ साहाविरतरप्रचंडे ॥ परयवेठेकाढीले ॥ ८७ ॥ हरि  
ससोडोनितेवेळां ॥ पुजगजालवगवा ॥ भडभडागरक्केजवाको  
मुरवावोठेसांडीतसां ॥ ८८ ॥ पड नेत्रहटान्चे  
आरक्त ॥ नाढांदोरउछास्त्र  
जैरस्या ॥ ८९ ॥ जीवहासुक्षुप्तु धड ॥ शातफथीयाकराक्षप्रचंडा  
पर्वतस्टगजैरस्यादाठ ॥ दंततीष्ठयनयान्चं ॥ ९० ॥ परमस्यालुरभूध  
रप्रांत ॥ तेजीक्षुनक्षणाक्षणाचारित ॥ करकराक्रोधं दंतरवात ॥  
हरिसलक्ष्मनस्त्रोधे ॥ ९१ ॥ क्रोधेयरथराजागकापत ॥ नेत्रगरगरा  
प्रावडीत ॥ पुढतीडौशकरावयाजपत ॥ मगरमानाथकायकरि ॥ ९२  
सांवरराजा चिमुतिहोय ॥ पुरुषमाय ॥ अपचाले

Saiawade Saini, Dahan, Maharashtra, Dhule and De Yashinagar, 1900 AD  
Digitized by srujanika@gmail.com

॥जाया १७॥

लवलाहें। पुछती धरीलाजुंग। १३॥ उधीरगरगराकोवडुनि। बचे  
 साफकीयमुनाजीवनी। निर्भयनिशंकन्वकपाथी। विहुराधीवंध  
 जो। १४॥ जोउरगाचाकाकपुणी। यावरीबैसानक्रिगमन। तोहा।  
 पुतनाप्रायहरण। जन्ममरणत्यानाही। १५॥ दृष्टिदृष्टिअफलुन  
 सपी। हरलासमुक्तब्लेष्टाप। गल्लाहुर्जनाचादपी। जालेष्ट्रमिन  
 जागपै। १६॥ सवेंचरिपि यावं। कगवेंते। पुछधरिलेंवामहस्तं  
 तांडवन्त्यश्रीजगन्मधे। जारंपि यावं। १७॥ निजपदघातेकल्याणी।  
 इतफणीयांलवविमोक्षहानी। तालवसंवत्तर्याणी। न्युक्रिभगवंत  
 १८॥ तोहीराबधीशाईवेकुंठविहारि। तोचपकन्त्यक्रिकाळयाक  
 णीवरि। कुठालववियेमुनानिरी। रथासउदिनसमाये। १९॥ खुकउन  
 पबोंपाहेजुग। पादिनसोडीचभक्तभवभंग। जोकांफणावरिकाढिव्यंग। इच्छा  
 हाणोनिदुडवित। २०॥ जोसवंतिरात्माभगवन। जोकांपुणीत्रिंश्यसनातन  
 तोकाळयतीरि। न्युकरण। पाहातांभकसुरवीहोति। २१॥ ८४



श्रीजगन्मधे  
 सत्येन्द्रन मन्दिर एवं यशोदा चावानपात्र  
 जून २०१५  
 दिन प्रौढ़ १०:३०

न्त्यकरिष्णगवंत्॥ गोदु चिजनतदस्तपाहृत॥ विसानु  
त॥ नहालतनेत्रपाति॥ २॥ देवटाकमंहागवाजविति॥ उपांगविनश्यत  
रिति॥ येककरटाकीयावाजवीति॥ न्त्यगतीपाहा नियां॥ ३॥ मदनमने  
हरवेधकमर्ति॥ आनंतकल्यानदायकआगाधकिति॥ पाहावयाजा  
हनायकांधावती॥ विस्मीतहोत्रीकिरत॥ ४॥ न्त्यकरितांपगवंत्॥ वं  
किनेषुरेत्यग्नुष्टीति॥ सुर्यंपीतांबरजावत्॥ कठिमदववास्तककेरि  
॥ ५॥ हस्तसंकेतहावीवनमात्रा॥ सुर्यकाश्वकतीदृशांशुवी॥ दिव्य  
पदकपद्मस्तकी॥ मुक्तमात्रा॥ अकृती॥ मंदस्मीतसुहास्यवदन  
आकर्णविराजतिराजीवनय  
द्रारज्ञवकतस्य॥ ६॥ रत्जडीतसुरुदमाथा॥ जेत्यमुत्तन्त्रिकरितां॥  
नानागतीनन्त्रनान्ततां॥ व्यक्ताकरदीस्ततस्य॥ ७॥ दिव्यसुमानान्यसंप्रा  
रा॥ घर्तातिसकलनिजेर॥ देवोनीमुत्तमिनोहर॥ देवांगनवेधलीया  
रा॥ तनमनधनेसीजाकीमान॥ क्षांडावयावचुनवोवावाङुन॥ ८॥

७०९

68  
 अग्रंतजन्मीचेतपांचरथा ॥ तदिच्यजगजीवन व्रासु होय ॥ १० ॥ जासोन्दस्यक  
 दित्रिकुवनपती ॥ टाक्कम्पदांगदेववाजविति ॥ काक्ययन्वेद्याथारिघोंपाहृती  
 सकव्रदातिजाकरल्ल्या ॥ ११ ॥ मुरवीश्वेषीतवाहृत ॥ उरगपड़लामुर्छीग  
 त ॥ विरालीज्ञाहंकृतीक्षमस्त ॥ गर्वहातजाला ॥ १२ ॥ रचास्तुखाससाडावया ॥  
 जोशीरजायेउचलावया ॥ हनिरावंननरगडानियां ॥ पुन्हाहालविनाभेदं  
 करि ॥ १३ ॥ मुजंगजाटवीश्रीजगन् ॥ धावंधावेंपुराणपुररा ॥ जगप  
 लकारमाविलाशा ॥ सोडीपूजयेलानि ॥ १४ ॥ करितांज्ञाचेस्मरण ॥ तोच  
 इगिरनाच्वतोंसमजेना ॥ त्रीभुवनस्त ॥ सोस्तवना ॥ प्रायसोडुंपाहातुसं  
 तामन्त्रकिनाचेंजगजेवि ॥ जासोका  
 १५ ॥ आनंतप्रस्त्राडेंज्याच्यापोटि ॥ तामन्त्रकिनाचेंजगजेवि ॥ जासोका  
 क्याहेवोनीकष्टी मुर्छीगतपडीयला ॥ १६ ॥ मगल्यामुजंगाच्यानितबीणी  
 करिरत्तादिपउजकोनि ॥ दारयायतीतेचक्षणी ॥ भक्तवल्लभाहरिते ॥ १७ ॥  
 हेकलेनागक  
 देवकरितेंतीरुतिते ॥ श्रीविरंचीजादिगानिज्याते ॥ हेकलेनागक  
 च्याते ॥ क्रिजगदा ॥ १८ ॥ काक्ययाजालान्नमेमुर्छीति ॥ जव



किं आसतां नेण भु  
१९॥ वारण अल्पा जापु लीया स्त्रीया ॥ हे हीन समजे काळया ॥ के वक्तु ठ  
दशा पावो नीया ॥ जगपृति सने पोचि ॥ २०॥ जैसे जव की दिव्यरत्न आसा  
नि ॥ अधास् कहान दिसे नयानि ॥ कि पिशान्यास न समजे मनी ॥ आपण  
कोण उगा होते ॥ २१॥ कि तुष्टि डोही तुड़ाला ॥ यास सहस्राश्र सन्न हाउ  
आला ॥ परिनक क्ल जैसे त्याल ॥ ते संजाकं क्ल याते ॥ २२॥ औस दे रवानि  
शारंग पणी ॥ वारण यती कुञ्ज गव ॥ २३॥ न सावरीति कष  
क्षये विवहूक ॥ न सावरीति कष  
ले वद्वस्त्रीये पदर ॥ विवहूक शारी  
रतन पणा ॥ ते युवती दावी तिजग ना होता ॥ कि लें कुरे दे रवाणा प्रज  
मुशाया ॥ द्वपाय ईल्हण उनी ॥ २५॥ ये के पसरण आमंच का ॥ चुड़ान  
मागती तमाछनि का ॥ जाम्बूवाती ये किंच्चाडोचा ॥ करणा गोपा का दवि  
ति ॥ २६॥ ये किंच्चाम कल्याबधां जुकी ॥ ये किंदू लागति चरण कमची

येकिकाकुक तिकरितीश्वीहरि ॥ देवनमाकीपतीहान ॥ २७ ॥ श्रीघट्टापद  
कमलावदि ॥ उद्गतनयाजाल्याक्षमरि ॥ तेथेचामकरंदज्यूतरि ॥ ठसा  
वितिश्रीतिने ॥ २८ ॥ येककरिसातिरत्तवना ॥ ब्रंशानंहाजगजीवना ॥  
दिनवच्छक्षितिवसना ॥ शाकठमर्दनाश्वीहरि ॥ २९ ॥ सीधुजापतीज  
गन्नीवास्य ॥ योगीमानसराहनहस्या ॥ घोरज्यूविद्यावनहुतांशा ॥  
परमपुरजश्चाविलासीया ॥ ३० ॥ गोपीशनस्तपकारचंद्रा ॥ ख्यच्छिदानति  
आग्नेयभद्रा ॥ समीरधीरष्टतपत्तुरा ॥ मन्मथजनकाजगहुरु ॥ ३१ ॥  
बाककरिवहुंतञ्चान्याये ॥ नाकरिनिजमाये ॥ माहाहुजे  
नहाआहिनिईय ॥ तवंपदरजांद्वरिला ॥ ३२ ॥ जेदुसरियाचाकर  
ईछीतिघात ॥ यासशाशाणकरिसीतुंजगन्नाथ ॥ परियेणतपपुवि  
बंहुंत ॥ कितिकेलेंनकेले ॥ ३३ ॥ बहुंतकेलेंपुरश्चरण ॥ किंसाधीले  
पंचाग्नीसाधन ॥ किकेलेसहुरुभजन ॥ साधुस्येवनश्रीतिने ॥ ३४ ॥



किं प्रेमं चर्य आचरला ॥ कि वत वह स्वधर्म रा ही ला ॥ कि चतुर्थ श्रृं  
स आवलं बिला ॥ तरि च पवला पद तु ज्ञे ॥ ३५ ॥ तु ज्ञे अंगी चि न्धि क  
ला ॥ ते च चरणी रा ही ली कमल ॥ ती परी समाग्ये आगला ॥ काळ  
या आनंद वाट तसे ॥ ३६ ॥ यो क छ आन्या यक्ष रण द्य म ॥ वज्र चुड  
दान दे ई आनंद ॥ हासु ठ परम दु चम ॥ तु ज्ञा माही माने णो चि ॥ ३७ ॥  
जानंत ब्रह्माडे पावका ॥ दे वासु ॥ तो जागर द्य का ॥ यह डा आन्या  
ये कमला नाय का ॥ घाली वाठा ॥ आन्या चि ॥ ३८ ॥ करु णो तु ज मारि  
ली लात ॥ पंरि तु ज गदा सा पुणो द्वा ॥ ते से च याचि आन्या य समर्ता  
द्य माक रि गो विदा ॥ ३९ ॥ औ सं उरग क अं या विन विति ॥ आही इरी शी  
ना चे जांग स चिति ॥ तों काळ याचि व्राण री द्यों पाह ति ॥ ने त्रि ही चंद्री ला  
ग ली असे ॥ ४० ॥ दे बोणी या आती समया ॥ करणा भा कि ती को गी द्र  
तनया ॥ करणा अंया याद वराया ॥ व्राण जाती कि यांचे ॥ ४१ ॥



उच्चपलुवपसन्निरति ॥ करितीनानाकाकुलति ॥ दिनवनेसुरविलोक्ति  
 दिनबंधुन्चेते धर्वां ॥ ४२५ जाहा स्त्रीहृष्णा जाम्बयारामां ॥ व्रेतद्राजा  
 मुजंगोतमां ॥ जामुचिनीनाशास्त्रीतमां ॥ जालीजातांयेथोनी ॥ ४३६ आ  
 नेकणगेजानोथं दिनदेव ॥ पतीजाणान्विनागतेंसीक ॥ हुंजदारजगप  
 िका ॥ कांधपणतां धरियली ॥ ४४७ धर्वा सुजाठव्यपदेदिधलें ॥ राक्तारी  
 जनकात्मजास्त्रापिलें ॥ जातांधर ॥ लीलाजामुद्देश्या ॥ उरकरणका  
 शी ॥ ४५८ उत्तीजेकोणकान्तण ॥ द्वर्षपुत्रलीलाजामुद्देश्या ॥ तैसचपाय  
 रयामदना ॥ पर्तकवचनापाकीलां ॥ ४६९ तर्पित्तुर्गितजाला ॥ तैसचपाय  
 परतांलोरीला जयजयकरितेवकां नागकन्यावोंवालति ॥ ४७० ॥ तोका  
 चयाजायंतद्वीण ॥ हाकुचउघुनपाहेनयन ॥ तोंदेवविमानीकरिती  
 चयाजायंतद्वीण ॥ वेकुंठनाथहापरमासां ॥ तेव्हाकच  
 चवन ॥ तेश्वरणीजेकमुजंगम ॥ ४८१ ॥ वेकुंठनाथहापरमासां ॥ तेव्हाकच  
 म्मुजंगोतम ॥ रत्नववयावेकुंधामा ॥ ताकुलजालानकप ॥ ४८२ ॥



जैसाव्यथासु तवाक के जापा ॥ वदेमंजु छहु कुं हकुं वचन ॥ तो सेष्ठु जंग  
हरिपदधन ॥ करिस्तवने ते धवां ॥ ८० ॥ जयजययादवकुके रीका ॥ नंद  
कुमरात्रजपाका ॥ चैलोकयचित्त्वाका ॥ शारणागतां रक्षीतुं ॥ ८१  
वाप्यान्वे जैसे संस्कार ॥ चराचरुजीवना विकार ॥ तेतेन सुटती निधि  
र ॥ जाती स्वभावें करणीया ॥ ८२ ॥ दुंवारक कलजाती निर्मुनी ॥ आसां  
सधातलें सपयोनि ॥ माहातामस गी ॥ सदामणी द्वावोढँ ॥ ८३ ॥  
हृषीलेव हुंत काम को धें ॥ नागविलें सदृश दं भगद ॥ यालागी तुझी चर  
वारविदे ॥ क्षमेकरणीनवोकवा ॥ ८४ ॥ लगली प्रपञ्चानी गोडी ॥ पा  
टोकी ली बांशानवेडी ॥ फिरफीरतां जालो वडी ॥ नसजां जावडी कद  
हते ॥ ८५ ॥ हरिस्तवो काकयास्तो ॥ बहुं तन बोलेवेल जालो ॥ तुं परिवोर  
येचवका ॥ जायस्तवा रासागरा प्रती ॥ ८६ ॥ उरगरी पुभयो पाही ॥  
आसीयमुनाडीही ॥ दुजजातां तो न करिका ही ॥ लुरवी राही येथुं



Rajastedhan Mandal, Picture of the Yashwantrao Chavhan  
Digitized by srujanika@gmail.com

१७ ॥ नार्थापदमुहुरुक्षेत्रीनि ॥ यालिगारवपनम् ॥ नमः ॥  
वरदेंसासागरि ॥ सुरिविरोहे काक्षया ॥ ५८ ॥ तुंजम्यांकेलेशाश्रण ॥ हरिले  
कागातीजेअनुदीन ॥ त्यासतुंष्टीनडंरवावेंपुर्णा ॥ पक्षावेउदानदेवतां ॥ ५९ ॥  
हेकाक्षयामर्दनकथाँजाण ॥ त्रीकाक्षपेठेषुष्यवतं ॥ त्याचेदृष्टीनेच्छस्ति  
माहाविषउत्तरेहो ॥ ६० ॥ काक्षयामर्दनुकरका ॥ जेग्हीसंग्यहीतीभवीक  
तेंग्हसेहुनतकाळीक ॥ त्याप्तिजातीवेष्टीया ॥ ६१ ॥ जेयोजेकीलेकाक्ष  
यामर्दन ॥ त्यासकाक्षहीकनन्दन ॥ नांकेचेत्यासपर्विज्ञ ॥ त्या  
सयेवोनवाधीना ॥ ६२ ॥ जेक्षर्पिताशमनीपुर्णा ॥ त्याचोमस्तकहोईल  
शतचुर्णा ॥ आसोकक्षयभासांवदु ॥ त्यापुजनहरिचें ॥ ६३ ॥ पुर्णशोडशो  
पचारिपुजा ॥ ब्रह्मक्षणाकरिगतउध्वजा ॥ घोषलक्ष्मीविलासामाहा  
दाजा ॥ दृपावहुआसोदें ॥ ६४ ॥ जेसेबोलोनीसहपरिवारें ॥ विनवान्  
सागरागेलाहर ॥ यमुनाज्मूरतमयज्ञालेनीर ॥ वाहोंलागलेंततक्षणी



जैसापरिसङ्गग्रतांपुर्णा॥ लोहोहोयताका कल्पवर्ण॥ किमीत्रकुछमुश  
णपदरजेंकरथी॥ विरंचितनयाउधरीली॥ दृष्टि॥ याचपरिहिनानोथं  
सुद्धकेलेंयमुनाडोहाते॥ मुरलीवाजवीलीस्वहस्ते॥ ज्येष्ठतिराजाला  
जहर॥ दृष्टि॥ शृणतीजालावनमाली पुणित्रिलानंदजालातेवकी॥ दुँहुंभी  
गजीतिनीराकी॥ लुभनेमुतकीवर्षति॥ दृष्टि॥ कमिपदेवोनिजानंता  
सहरीतजालीमातां॥ धावोनमेटलीजन्माथा॥ दृष्टानज्ञातांकायदेउं॥ दृष्टि॥  
चतुर्दशवत्तत्रोंवनीक्रमुन॥ आसुध्ये लारहुनंदन॥ कौशाल्यामेटली  
धावोन॥ तेसच्छस्याभाकंगीला॥ दृष्टि॥ गाहानीयांदृष्ट्यावदना॥ रक्त  
नीदरदरणीफुटलापान्हां॥ आडवंधवानीजगन्मोहना॥ वेमेमायान  
सोउी॥ दृष्टि॥ नेत्रीन्वासुरव्याभास्तधारा॥ तेगेजाभीशीकजालारामसुं  
दरा॥ शृणमाश्यासंवकीयाश्रीधर॥ कैसावंचुनजालान्मि॥ ५०॥ जैसेह  
पणावेठवनेत्तुकले॥ तेबहुंतां दिवसंसापउले॥ किजाहुजुडतांकेडलागले॥

तैसेजोलेमायेसि ॥ ७१ ॥ किञ्चोरीमारितां आरध्यात् ॥ यकायकी धंव  
 धंवत् ॥ यान्व्यासु रवासनसेभंत् ॥ तैसेजोलेमायसी ॥ ७२ ॥ किप्राण  
 तां यकायकि ॥ सुधारसचावलासुरवी ॥ तोप्राणीजैसाहोयेसुरवी ॥ तैसे  
 लेमायसी ॥ ७३ ॥ किवोनत्यामाजीजक्षतां ॥ घनवर्तषेकाजावचितां ॥  
 तैसदेवतांश्रीद्वक्षानथा ॥ जालभातात्सुरवीतों ॥ ७४ ॥ मातेन्व्याचरण  
 वरि ॥ नमनकरिमधुकेउभा ॥ द्वयवानिश्चिकरि ॥ हृदईधरिश्री  
 रंगा ॥ ७५ ॥ नंदहृदईजनसेमवित् ॥ किविभुवनिमिच्चमाग्यवंत ॥ नंद  
 आनन्देनान्वत् ॥ लुकवगगर्नातनस्ताय ॥ ७६ ॥ किराकिनेभदिलासुमि  
 चासुत् ॥ जोशधीघउनीजालाहुमंत ॥ अनुजउटतां जानदेनघुनाथ  
 नंद आनदृत्यापरि ॥ ७७ ॥ किसाधुनसंजीवनी ॥ उत्तरसुतजालापर  
 तानि ॥ सहस्रक्षपरेधावोनी ॥ नंदामनिनेविवोठं ॥ ७८ ॥ जासोह  
 दिनेनसीलेनंदोत् ॥ तोबकीराम धोवेंमेघवयोते ॥ हासोजालेसंकरि

Rishivade Sanshodhan Mandal, Dhule and the  
 Rishwantrao Chiplan  
 Pali, Maharastra, India

१६

१३।

हारिमुखातपाहुनि ॥७९॥ कासंकर्षण हारसोला ॥कायजाथ  
 ला ॥ किम्याशोकनाहीकेला ॥ व्रतांपञ्चाहुतंजायोनि ॥८०॥ दृतांत  
 संशाश्रयाकती ॥ मगकांशोककरावावथा ॥ आदिजातिमध्येपाहातां  
 दुजपरतांकोणज्ञासें ॥८१॥ देरवोनीयां विभुवननायक ॥ प्रैमेसहीतजाल्य  
 गोपीका ॥ आगीतटत दिव्याकंडुक्य ॥ हरपिठिनसमायें ॥८२॥  
 देंडकरिदत्तजडीत ॥ मनगटयपासीहाटत ॥ गोपीयठनचरणाला  
 गत ॥ ब्रह्मानदंकरणीयां ॥८३॥ सकलगोपीयांलाहनथोरा ॥ भेट  
 लापराहरसोयरा ॥ जादुभयक्षयुराखरा ॥ सुलभजालागाकु  
 छीतों ॥८४॥ आसोभरतामीनागलागमस्ती ॥ तथचलोकीकेल  
 वक्ती ॥ सकलनिराणवि निराणविनीमग्नहोती ॥ चिंताचिति  
 सचि ॥८५॥ आरताचलाजातावसरभणी ॥ द्विजबेस्तिस्तव्यास  
 लियेउनि ॥ मिलींदवारिजकोशीव्रवशोणी ॥ आमाहतेंसेवित ॥८६॥

Sanskrit Mantra  
 Translated by  
 Sambhulan Mandal, Dhule and the  
 Joint Project of  
 Savitri Patel, Mumbai,  
 Chavhan Patel, Mumbai,  
 and the  
 Devadeo Chavhan  
 Patel, Mumbai

१४

तरथाजेजेविशयपरा ॥ ल्याहुदईसंचरेपञ्चरात् ॥ रात्रजालीदोणव  
 र ॥ स्वापदेंदुर्धरबाहुनी ॥ ८७ ॥ परमहाटलीघोररजनि ॥ दीजान्त्याः  
 टतीनानाधनी ॥ सीसेवाघुलामिठिघालुनि वक्षडाहाक्षीयाले  
 ति ॥ ८८ ॥ वनदैवतेगंधर्वक्षणी ॥ गांदक्षद्यालीतिमाहावनी ॥ आपस  
 राज्याज्वलरपदानि ॥ ते वक्षणे उपहोति ॥ ८९ ॥ नानावल्लीचे  
 कंबाळ ॥ दिसतिजावचिते ॥ ९० ॥ वेतगयामिकालेसकळ ॥ प्रय  
 सुरकेवक्षदिसति ॥ ९० ॥ नि करितिसुतंवेत ॥ छळातीआमंग  
 क आपवित्रोते ॥ दिवापीताच्छुद्धुवाटतेथं ॥ पिगवेथेर किलवि  
 लीती ॥ ९१ ॥ झालुकासुंकतिक्षणाक्षणी ॥ दिटवेशाब्दकरितिगग  
 नि ॥ करथास्वेरकरथी ॥ चक्रवाक्याबाहति ॥ ९२ ॥ चंद्रकुमोदि  
 निविकाशति ॥ क्षमरतेथंपाहोयेति ॥ उरगबाहरीनीघती ॥ सैराति  
 हुकडे ॥ ९३ ॥



The portrait of the sage Sanshodhan Mandal, Dhule and the renovation of Chavand Project by the Inter-Departmental Committee on Sanskrit, Ministry of Culture, Government of India.

नवनेचारायां निघती ॥ द्वयद्वयणा प्रभाविता ॥ तमा १४  
विती ॥ यउंस्तु तिग्न हाहुं ह्या ॥ १४ ॥ तवं तोवसंतराहुं उष्णकाळ ॥ व  
वाहुनगेली सकव्या ॥ पुर्विचकाळयाचामुखवानवा ॥ जाग्रीत हातांव  
नोते ॥ १५ ॥ तो आहुं तवातसुरला ॥ आग्न गोक्षीयावरि परतला ॥ न्सक  
वतां वेढापडिला ॥ आंतश्याकीला पविता ॥ १६ ॥ आकाशाकवक्षीलेज्वाव  
झुंझाठेउटतीवेणुनक्षे ॥ पवतीपहोयचेपाळे आहाळोनिमाजी  
पडतीपै ॥ १७ ॥ यकाशकी ॥ गोक्षी ॥ आउडतउठकेतेवेळी ॥  
तो आकाशश्याकले आग्नकले ॥ गवनाहीपकावया ॥ १८ ॥ जाग्य  
जालया गोक्षनि ॥ हडबोडापिउठु ॥ द्वाराणी ॥ व्यणं कोठं लपउचक्कपाणी  
देईमेदीनिवज्ञातां ॥ १९ ॥ गोक्षी गोक्षनिकरि निचितां ॥ आमुचें व्राण  
जावोतज्ञातां ॥ परिकैसेकरोवेभातां ॥ वांचेलकैसानेणवें ॥ २० ॥  
गोक्षिकरितिथोरधावा ॥ धांवेवैकुंठपतिकमकाधवा ॥ विश्वव्यापका  
रेवा ॥ द्वष्णं आमुचावाजवि ॥ २१ ॥ दिनवहनेहाकाफोडीती ॥ ज्वाव

जाव्याभाव्याद्युषणती ॥ यकापार ॥ दुधरगतिवाडव  
 मायणेहरि धरिलाहृदई ॥ ह्यणेद्यन्त्यावाच्वायस्मई ॥ पकावयादा  
 वनाही ॥ धावेलवलाहीभगवंतां ॥ ३ ॥ देवेनितयाचीकास्या ॥ द्वपाउ  
 पजलीकमलनयना ॥ संगेंसावपयाकृजजना ॥ स्त्राकांनयनास्मस्त ॥ ४  
 हरिकचनिविश्चासधननि ॥ नेत्रज्ञ केलंस्मस्तजनि ॥ व्रंदाडनायक  
 यपचिकरणी ॥ इविविरंचिसि ॥ ५ ॥ आसंसाव्यपसरिलेंवदनं ॥ जो  
 विराटस्यत्पीभगवान् ॥ द्वादश ॥ माहाभाग्न ॥ नलागतांद्युषणगी  
 लियला ॥ ६ ॥ मायुतीजला ॥ रात्रा ॥ सहास्त्रानकक्षेष्ठातुज्य  
 चा ॥ हरिसक्खांसिवदेवाच्च ॥ नेत्रउघडाक्ष ॥ ७ ॥ सकर्वीउघ  
 डिलेंनयन ॥ आनुमात्रकोठेनदिसेष्याग्न ॥ गौत्रतीहरिसयेउन  
 ल्यणतीमाहीमानकक्षेतुक्षी ॥ ८ ॥ तोंसवेचीजाठी ॥ च ॥ च ॥ च ॥  
 लण्ठनवात ॥ दानवस्तुनेलदराप

The Rajawade Sanskrut Mandal, Poona and the Yeravada  
 Prisoner of the Rajawade Sanskrut Mandal  
 Serial Number: १२४  
 Date: १२४

सुरु तुरवधुतले ॥ आ  
रपले ॥ ज्ञानेनीरसीले आज्ञानजाप ॥  
क्षमरकमकालुं नमुकजाले ॥ तस्करवंदीवाह  
लेश्रहपणे ॥ ११ ॥ निजगटहासयेवानीजार  
चार ॥ जोस्मशाणीजपकरणार ॥ कुटीकनरपछतीती ॥ १२ ॥  
दृकुठकागबाहाती ॥ चिम्यांयां ॥ अंशुजगुजीति ॥ आवनीहा  
विस्तानेकरिति ॥ होमध्यावकार ॥ १३ ॥ कापडीतीर्थपथेंजाती  
कपकप्रातःस्मरणेगजीति ॥ तै ॥ विस्तुतेचीतीती ॥ द्रेवध्याति  
द्रीवाते ॥ १४ ॥ हातिघेऊनीआधुजक ॥ सोरपहातिसुयमेंड ॥  
गणापत्यपरंभज्जुरीक ॥ गयापतीतचितिती ॥ १५ ॥ द्राक्तचितिती  
शाकिते ॥ उत्तमकजाटविनिष्ठंचरणाते ॥ विध्याधर्थिकचिते  
पछतीवेदविध्य ॥ १६ ॥

गहीगहीच्चाललनाउटती ॥ जांगव्रक्षाकुनकुंकुमेरवीति ॥ सडास  
 मारजनकरनिनिश्चीति ॥ मगधालीतिरंगमाळा ॥ १९६ ॥ करयीयं  
 गोंदोहुन ॥ वेगेंआरंकीतीउसवन ॥ जैसोउदयपावलासहस्रकिर्ण  
 गैकीतेथुनीनिघाले ॥ १९७ ॥ खेतनियातमालनिळा ॥ समस्तचालीले  
 गोकुकां ॥ वाच्यांचागजन्तव्यां ॥ जातिजालासघणपै ॥ १९८ ॥  
 मोहरीपावेस्तवंग ॥ डफडीसंयावंग ॥ मिरवतजातसेश्रीरंग  
 नदयेशोदेसहित ॥ २०० ॥ द्यूष्टविपलुवच्छवें ॥ गोलिधरितीजा  
 सादरें ॥ चंद्रघ्रमेघेसीच्यामरें ॥ यकावरियेकठाळीति ॥ २१  
 सावरंशाचिमुतहित ॥ केलीजांभृद्गुतविजुष्यीकीति ॥ कर्णकुडल  
 वती ॥ नयनीविकाशातीजाकर्णी ॥ २२१ ॥ कपाळीत्रिपुंडरेवीला  
 नगीचंदनचर्चिला ॥ चिमणीमुरलीसंवला ॥ वाजवितजातसे ॥ २२२ ॥

गच्छमणि पाक मिळोनी॥ हुंमलीघालीतिछ्डेकरणी॥ यक  
मोन्यायेतीगोळनि॥ आरथाघेउनि हरिते॥ २४॥ येरोहाकरि  
निबंलोन॥ हरिदेतलाकडेउचलोन॥ युहुंप्रवशीशोशानारायथा  
धन्यदैवनंदाचे॥ २५॥ हरिच्छावतारसवउतमा॥ परिहे आवता  
रिच्छेकाकर्म॥ जातिजाहुत्परम जेनवष्टविशेषाते॥ २६॥ दिव  
सदिवसांज्ञातीशीति॥ उआहुत्तीकरण द्वनकिति॥ सीनव्याव्यासां  
दिकाच्यामती॥ तेथेंमीकीतीकाय इ॥ २७॥ थोरपवाडावीला  
केवळकाळयांमदिला॥ दादरागवासांगीला॥ वाचउनियांस  
कवळकाळयांमदिला॥ २८॥ कवयुगीभवनदिसपुर॥ आयंतदाठलाडुंधरि॥ हरि  
विजयग्रंथथेव॥ नौकातेथेंतांरावयां॥ २९॥ झावीकहो धावालैकरि  
सद्वरबेसायानावेवनि॥ द्रेमाच्चाध्वजनिर्धरी॥ जातीसतेजफडकत  
चं॥ ३०॥

Gifted by Sanskruthi Mandal, Dilwara and the Yagnantrao Chavhan Pillai Library Number:



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)